जून २०१४

क़ीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

घुस २-घुस २

अक्रम एक्सप्रेस

संपादकीय

बालमित्रों,

"आज वह टीचर से तुम्हारे बारे में ऐसा कह रहा था कि यह गेम इसे किस ने दिया? लगता है इसने ज़रूर किसी से छीना है।" अंदर ही अंदर फ्रेन्ड्स के बीच हम ऐसी कितनी ही बातें करते रहते हैं? और वह भी इस तरह ताकि कोई सुन न ले। कभी सोचा है कि ऐसी बातों में हम कितना समय बिगाड़ते हैं? तुम्हें पता है इसे क्या कहते हैं? ऐसा करना कितना योग्य है? इसका फल क्या है?

परम पूज्य दादाश्री ने इस बारे में सुंदर बातें समझाई हैं। आओ, हम भी इन्हें समझकर अपने जीवन में बदलाव लाएँ।

- डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

३ ज्ञानी कहते हैं...

४ चलो वैसा ही एक उदाहरण देखते हैं...

५ बेतुकी बातों का स्वरूप

१० इसमें क्या फायदा?

१४ चलो खेलें

१५ मीठी यादें

१६ ऐतिहासिक गौरवगाथा

१९ किड्स कैम्प की झलक

संपादक:
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक: ३
अखंड क्रमांक: १५
जून २०१४

संपर्कसूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by
Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

ज्ञानी कहते हैं...

दीपकभाई : औरों की बेतुकी बातें करने जैसा नहीं है। उसमें भी जो व्यक्ति मौजूद नहीं हो तो उसकी बात करनी ही नहीं चाहिए। और यदि करनी हो तो पॉज़िटिव बातें करना।

इसके बजाय "हें, फिर क्या हुआ? उसने क्या किया? किसने किया?..." ऐसा सब करना यह सब बेतुकी बातें हैं। और फिर ऐसा सब जानने के बाद भी उसे चैन ही नहीं पड़ता। बात सुनी कि फिर जल्दी से किसे बता दूँ, "तुम्हें पता है, ऐसा हुआ था? वे ऐसा करते हैं, ऐसा कहीं करना चाहिए? बहुत गलत बात है।..." ऐसी सब बातें औरों से कहते रहते हैं। किसी की सुनी हुई बातों में से अच्छी बातों को न कहते हुए बुरी बातें जल्दी से बता देते हैं।

ये अफवाह खुद की कल्पनाओं की ही बातें होती है, वास्तव में बात कुछ और ही होती है। पंद्रह लोगों को लाइन में खड़ा किया जाए और एक के कान में मैं कहूँ कि "रविवार को सत्संग रखा है।" अब यह बात तुम्हें दूसरे से कहनी है। फिर अंत में पंद्रहवें व्यक्ति से पूछें तो कहेगा "अमरीका में भूकंप आया है।"

यहाँ मैंने कहा क्या और अंत में निकला क्या। वह बोले कुछ और यह समझे कुछ और। एक व्यक्ति से कही हो और वह बात पाँच सौ व्यक्तियों तक पहुँचें तब तक तो बात का बतंगड़ बन जाता है। इससे तो कितनी परेशानियाँ खड़ी हो जाती हैं। कितनों को दुःख हो जाता है और हमारे लिए भी नुकसानदेह ही है। इसलिए बहुत सावधान रहना चाहिए। किसी की नेगेटिव बात करनी ही नहीं चाहिए।

चार फ्रेन्ड्स इकट्ठे हों तो किसी न किसी की नेगेटिव बातें चलती ही रहती है। समझदार व्यक्ति को तो क्या करना चाहिए कि कोई नेगेटिव बात करना शुरू करे तो उसे पॉज़िटिव कर दे। अपने में तो इतना अधिक पॉज़िटिव होना चाहिए कि सामनेवाले का नेगेटिव अपने पास टिके ही नहीं। वह नेगेटिव हमारे अंदर तो जा ही न पाए बल्कि उसका भी खत्म हो जाए।

अपने में तो इतना अधिक पॉज़िटिव होना चाहिए कि सामनेवाले का नेगेटिव अपने पास टिके ही नहीं।

चलो वैसा ही एक उदाहरण देखते हैं...

१. एक पंडित थे। वे रास्ते से जा रहे थे। हवा के कारण एक पंख उड़ते-उड़ते उनके मुँह में घुस गया।

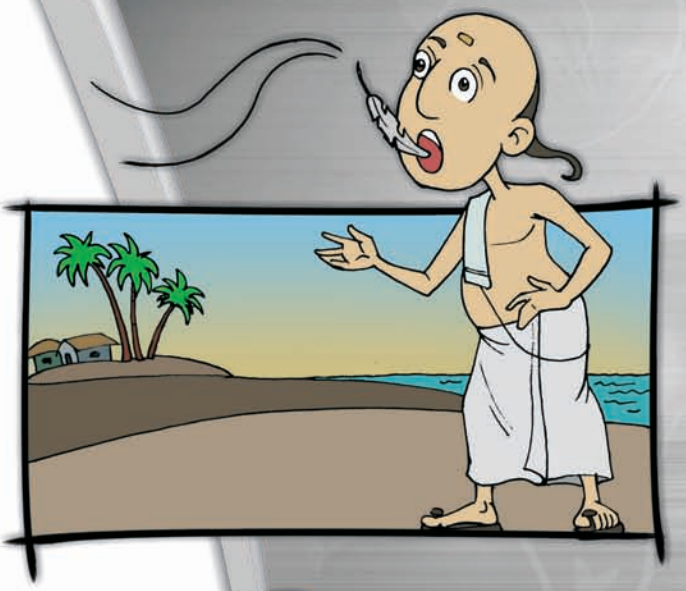

२. घर जाकर,
पंडित(पत्नी से): आज मेरे मुँह से पंख निकला। लेकिन देखना... किसी से कहना मत।
पत्नी: हाँ, नहीं कहूँगी।

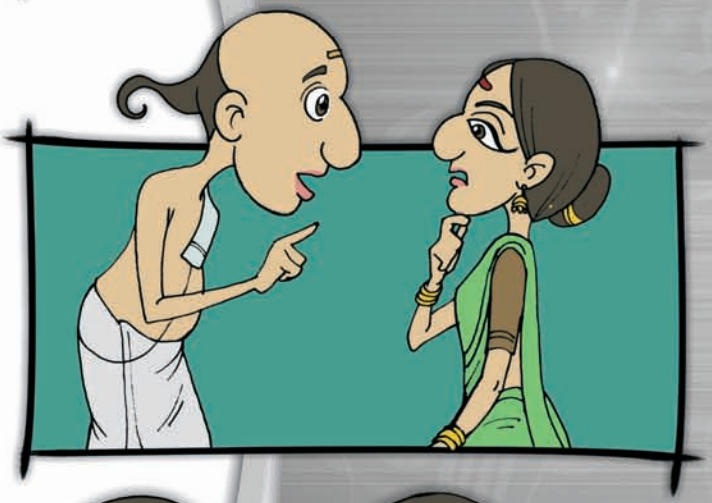

३. पत्नी के पेट में खलबली मच गई। वह गई पड़ोसन के पास...
पत्नी: सुनती हो, आज पंडित जी के मुंह में से पंख निकला। लेकिन देखना, किसी से कहना नहीं।
पड़ोसन: नहीं कहूँगी।

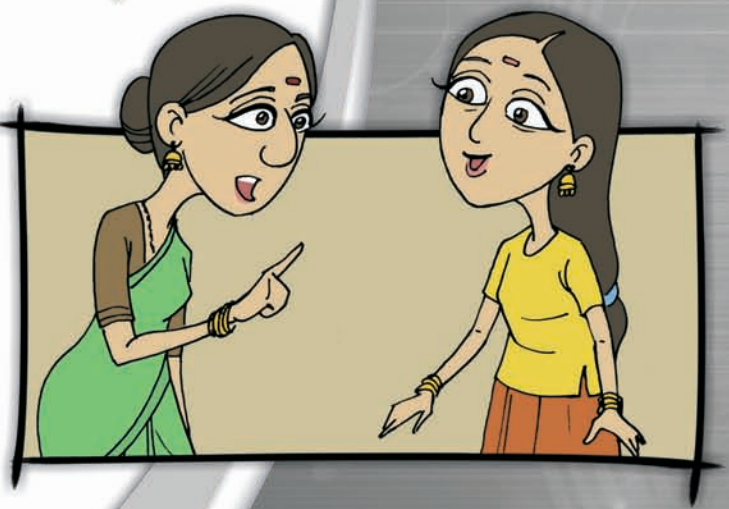

४.

पड़ोसन समझी कि पंडित जी के मुंह में से मुर्गा निकला। उससे रहा नहीं गया। तभी उसके घर धोबन आई।

पड़ोसनः तुम्हें पता है, पंडित जी के मुंह में से मुर्गा निकला।

धोबन(अचम्भे से): क्या?

धोबन समझी कि पंडित जी के मुंह में से बहुत सारे मुर्गे निकले। उसने औरों से यह बात कही, दूसरे ने तीसरे से कही, तीसरे ने चौथे से कही...

५.

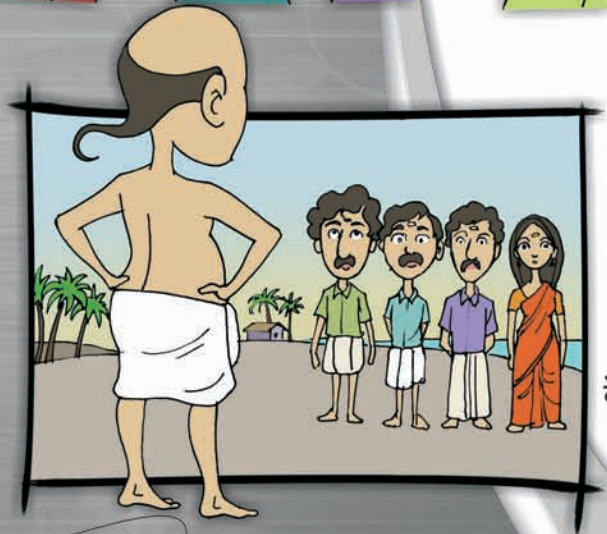

६.

और इस तरह, पूरे गाँव में बात फैल गई कि पंडित जी के मुँह में से बहुत सारे अलग-अलग तरह के पक्षी निकले। पूरा गाँव पंडित जी को देखने उनके घर इकट्ठा हो गया। पंडित जी को पता लगने पर उन्होंने हकीकत बताई और सभी को घर वापस भेज दिया।

देखा... घुसर-पुसर का फल - बात होती क्या है और फैलती कुछ और है!

बेतुकी बातों का स्वरूप

भास्कर महाराज सरखेज गाँव के आदरणीय और प्रतिष्ठित ब्राह्मण थे। गाँव की पंचायत, बुजुर्गों और बच्चों को महाराज के प्रति अत्यंत श्रद्धा और मान था। सत्यनारायण की कथा हो या दीवाली की लक्ष्मी-पूजा, शादी का शुभ मुहूर्त हो या फिर श्राद्ध की विधि हो, सभी अवसरों पर भास्कर महाराज की मौजूदगी तो होती ही थी। इतना ही नहीं बल्कि पड़ोस के अमरेली शहर में भी भास्कर महाराज प्रसिद्ध थे। अमरेली में उन्हें रामायण-महाभारत की कथा सुनाने के लिए अक्सर निमंत्रण मिलते ही रहते थे।

उनका एक तेरह साल का बेटा भी था। उसका नाम गौतम था।

रविवार सुबह दस बजे का समय था। नियमानुसार गाँव के मंदिर के आँगन में भास्कर महाराज का प्रवचन शुरू हुआ। आज के प्रवचन का विषय था "सिनेमा के दुष्परिणाम।"

प्रवचन समाप्त होते ही छोटी सी चैताली ने सवाल पूछा, "महाराज, सिनेमा तो मनोरंजन का बड़ा साधन है, तो आप सिनेमा देखने के लिए मना क्यों कर रहे हैं?"

भास्कर महाराज ने धीरज से चैताली का प्रश्न सुना और गहरी सांस लेकर जवाब दिया, "चैताली, तुम्हारी बात सही है। इस युग में सिनेमा मनोरंजन का बड़ा साधन बन गया है। लेकिन बेटा, सिनेमा देखने से चित्त बिगड़ता है और पढ़ने में एकाग्रता लाने की शक्ति भी खत्म हो जाती है। मनोरंजन के लिए दूसरे बहुत से साधन हैं न?"

और इस तरह, भास्कर महाराज ने सिनेमा के बहुत सारे दुष्परिणाम बताए। चैताली को महाराज की बात समझ में आ गई। गाँव के बाकी लोगों को भी महाराज की बात गले उतरी।

इस बात के कुछ महीनों बाद भास्कर महाराज को अमरेली में सत्यनारायण की कथा करने का निमंत्रण मिला था। वे गौतम को भी साथ में ले गए। कथा पूरी करके भास्कर महाराज, गौतम को लेकर शहर की तरफ जाने लगे। गौतम को आश्चर्य हुआ, "हर बार तो पापा सीधे बस स्टेन्ड जाते थे, तो आज दूसरे रास्ते

क्यों जा रहे हैं?" फिर भी, वह चुपचाप महाराज के साथ चलता रहा और आखिर में महाराज ने "संगम" थियेटर में प्रवेश किया, गौतम चकित हो गया।

संयोगवश उसी समय सरखेज गाँव की गीता वहाँ से जा रही थी। गीता, चैताली की खास सहेली थी। उसने महाराज और गौतम को संगम थियेटर में प्रवेश करते हुए देखा।

चैताली को यह बात बताने के लिए गीता उतावली हो गई। उसने तुरंत ही चैताली को फोन किया, "चैताली, तुम्हें पता है, मैंने क्या देखा?"

अचानक गीता का ऐसा प्रश्न सुनकर चैताली बोली, "नहीं, मुझे कैसे पता चलेगा? लेकिन ज़रा सांस लेकर शांति से बोल। इतनी हाँफ क्यों रही है?" गीता फोन को और करीब लाते हुए धीमी आवाज में बोली, "अरे यार, बात ही ऐसी है। आज मैंने भास्कर महाराज और गौतम को अमरेली के संगम थियेटर में जाते देखा। मुझे पता नहीं है, वहाँ कौन सी फिल्म लगी थी, लेकिन मेरे ख्याल से कोई अच्छी फिल्म तो नहीं थी।"

यह सुनकर चैताली एकदम चौंक गई, "क्या बात कर रही है तू? मुझे यकीन ही नहीं हो रहा है। भास्कर महाराज गौतम को इतनी गंदी फिल्म दिखाने ले गए? हमें तो बड़ी-बड़ी सीख दे रहे थे। कितने दंभी हैं। यह बात मेरी मम्मी को बतानी पड़ेगी।" फोन रखकर चैताली तुरंत मम्मी के पास गई और पूरी बात का वर्णन किया। बात सुनकर चैताली की मम्मी को आघात लगा, "बहुत ही दुःख की बात है बेटा। हम सभी को भास्कर महाराज पर कितना विश्वास था। कितनी श्रद्धा से उनके प्रवचन सुनते थे। लेकिन लगता है कि उनकी सभी बातें आडंबर ही थीं।"

बात चैताली की मम्मी तक ही सीमित नहीं रही। उन्होंने भी फोन करके दो-तीन पड़ोसियों को बताया। और धीरे-धीरे पूरे गाँव को यह बात मालूम हो गई। सभी इस बात की चर्चा करने लगे कि भास्कर महाराज शहर में अपने बेटे के साथ कोई अयोग्य फिल्म देखने गए। और अंत में बात भास्कर महाराज तक भी पहुँच गई।

"अरे यार, बात ही ऐसी है। आज मैंने भास्कर महाराज और गौतम को अमरेली के संगम थियेटर में जाते देखा।"

देखते-देखते वापस रविवार के प्रवचन का समय आ गया। सभा में सभी के गंभीर चेहरों को देखकर भास्कर महाराज को थोड़ा दुःख हुआ। उन्होंने अपना प्रवचन शुरू किया, "आज मैंने तुम सभी को रामायण की वीडियो दिखाने का सोचा है। उसके लिए वीडियो का भी इंतज़ाम किया है। वैसे तो मेरे पास बहुत समय से ये वीडियो थे। लेकिन उनके "फोर्मेट" ठीक न होने के कारण मैं अभी तक तुम सभी को बता न सका। वीडियों फोर्मेट करवाने के लिए मैं संगम थियेटर के मालिक से मिलने गया था। संगम थियेटर के मालिक मेरे मित्र हैं और वे वीडियो रीफोर्मेट करने का काम जानते हैं। उन्होंने मुझे एक वीडियो रीफोर्मेट करके दिया और गौतम को रीफोर्मेट करना भी सिखाया। इसलिए गौतम और मैं संगम थियेटर गए थे। मुझे ख्याल है कि आप सभी को मेरे बारे में कहीं से किसी गलत बात की जानकारी मिली है, जिससे आप सभी को आघात लगा है। लेकिन मेरी स्पष्टता से आप सभी को मेरा थियेटर जाने का कारण समझ में आ गया होगा और समाधान मिला होगा।"

हकीकत सुनकर सभी गाँववाले एकदम स्तब्ध हो गए। महाराज के बारे में गलत बात फैलाने का सभी को अफसोस होने लगा। सभी के उदास चेहरों को देखकर भास्कर महाराज बोले, "हम वीडियो देखें उससे पहले मैं आप सभी को सोक्रेटिस की एक कहानी सुनाना चाहता हूँ। सोक्रेटिस प्राचीन ग्रीस के एक माने हुए फिलोसॉफर थे। उनकी समझशक्ति और विचारधारा के लिए वे बहुत प्रसिद्ध थे।"

एक बार सोक्रेटिस का एक शिष्य उनके पास आया। और उनसे कहने लगा, "तुम्हें पता है कि मैंने आपके एक शिष्य के बारे में क्या सुना है?"

वह आगे कुछ बोले उससे पहले सोक्रेटिस ने पूछा, "तुम मेरे उस शिष्य के बारे में कुछ बोलो उससे पहले इस बात को हम तीन "स" की परीक्षा में से गुज़ारते हैं। यदि यह बात इन तीन "स" की परीक्षा में से पास हो जाए, तब तुम निश्चिंत होकर मुझे यह बात बता सकते हो।"

"तीन "स" की परीक्षा क्या है?" उस दूसरे शिष्य

"यदि यह बात इन तीन "स" की परीक्षा में से पास हो जाए, तब तुम निश्चिंत होकर मुझे यह बात बता सकते हो।"

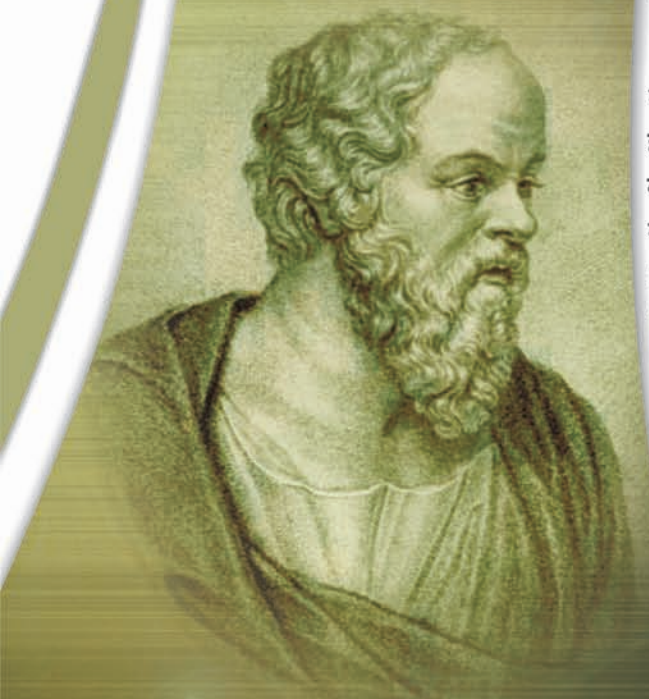

ने पूछा।

सोक्रेटिस ने जवाब दिया, "पहले "स" की परीक्षा लेते हैं, यानी कि "सही" की परीक्षा। तुम जो बात मुझसे कहना चाहते हो, क्या वह बात "सही" है? उसकी हकीकत तुमने खुद पता लगाई है?"

शिष्य ने कहा, "नहीं, यह मुझे पता नहीं है। मैंने तो बस दूसरे शिष्यों को इसकी चर्चा करते हुए सुना था।"

यह सुनकर सोक्रेटिस ने कहा, "कोई बात नहीं, हम दूसरे "स" की परीक्षा करके देखते हैं। तुम जो बात मुझसे कहना चाहते हो, वह "सुवार्ता" है क्या?"

शिष्य ने जवाब दिया, "नहीं गुरुजी। वास्तव में तो वह एक खराब बात है।"

यह सुनकर सोक्रेटिस ने कहा, "तो तुम मुझसे उस शिष्य के बारे में खराब बात कहना चाहते हो, और तुम्हें यह भी नहीं पता कि वह बात सही है या नहीं।"

उस शिष्य को थोड़ी शर्म आई। सोक्रेटिस ने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "कोई बात नहीं। अब तीसरे "स" की परीक्षा- क्या वह बात मेरे या किसी के लिए "सदुपयोगी" है?"

तब शिष्य ने उत्तर दिया, "नहीं गुरुजी। वैसे तो यह बात किसी के काम आए ऐसी नहीं है।"

तब सोक्रेटिस ने कहा, "जो बात सही, सुवार्ता या सदुपयोगी नहीं है तो वैसी व्यर्थ और बेकार बात करने का क्या फायदा?"

शिष्य को अपनी गलती समझ में आ गई और वह चुपचाप वहाँ से चला गया।

यह बात सुनकर गाँव वासियों को भी व्यर्थ की चर्चा और व्यक्ति की गैरमौजूदगी में उसकी नेगेटिव बाते करने का नुकसान समझ में आया। सभी ने भास्कर महाराज से माफी मांगी और कभी भी किसी की निंदा या बुराई नहीं करने का निश्चय किया। उस दिन से भास्कर महाराज पर सभी का विश्वास और मज़बूत हो गया।

और उसके बाद सभी ने मिलकर रामायण की वीडियो देखी।

"जो बात सही, सुवार्ता या सदुपयोगी नहीं है तो वैसी व्यर्थ और बेकार बात करने का क्या फायदा?"

इसमें क्या फायदा?

मैत्री और मैथिली खास सहेलियाँ थीं। मैत्री तेज और बातूनी थी, जबकि मैथिली शांत और गंभीर थी।

शाम को स्कूल से वापस लौटते समय...

दूसरे दिन मैथिली हेडमास्टर की ऑफिस से परिणाम पत्रों का सील्ड पैकेट लेकर स्टाफ रूम की तरफ जा रही थी। तभी पीछे से मैत्री ने उसे टपली मारी

एक बार गाँव में एक बूढ़ी अम्मा को झूठ बोलने और औरों की बेतुकी बातें करने के अपराध में पंचायत के सामने हाज़िर किया गया। लेकिन अम्मा तो अपनी गलती कबूल करने के लिए तैयार ही नहीं थी।

सरपंच जी, मैंने तो सिर्फ मेरा अभिप्राय सबको बताया था। यदि लोग इसे फैला दें तो इसमें मेरी क्या गलती?

सरपंच ने अम्मा को पाठ पढ़ाने के लिए एक युक्ति की।

अम्मा, एक मुर्गा ले आओ। मुर्गा लाते समय उसके सभी पंख रास्ते में फैंकते-फैंकते आना।

यह लीजिए साहब, मुर्गा। इसके सभी पंख रास्ते में फैंकते-फैंकते आई हूँ।

अब वापस जाकर वे सारे पंख इकट्ठे करके लाओ।

यह सुनकर अम्मा तो उलझन में पड़ गई।

लेकिन, यह कैसे संभव है? इतनी देर में तो हवा से सब पंख कहीं न कहीं उड़ गए होंगे? सरपंच ऐसा कैसे कह सकते हैं?

यही बात तो सरपंच अम्मा को समझाना चाहते थे कि जैसे एक बार फैंके हुए पंख, हवा से सभी दिशाओं में उड़ जाने के बाद इकट्ठा करना असंभव है। उसी तरह नेगेटिव बातें भी यदि एक बार फैल जाएँ तो उन्हें भी वापस करना उतना ही मुश्किल है। इसलिए नेगेटिव बातें नहीं करनी चाहिए और औरों के बारे में बेतुकी बातें करने में नहीं पड़ना चाहिए।

यदि तुम्हारी कही हुई नेगेटिव बातें फैल जाएँ और चैताली और गुंजन को पता चल जाए तो उन्हें कितना दुःख होगा।
ठीक है, आज से "नो गोसिपिंग" और उन फिल्मी मैगज़ीन्स को भी "बाय-बाय।"
तभी पीछे से अश्मी ने मैत्री को एक हल्की सी चपत लगाई।
एक ज़ोरदार न्यूज़ है यार।
सॉरी, अब मैं वह मैत्री नहीं रही।
क्या???
मैथिली ने मैत्री को हल्की स्माईल दी। दोनों सहेलियाँ स्टाफ रूम के लॉकर में परिणाम पत्रों का पैकेट रखने चली गई।

चलो खेलें...

१.

आपको एक रास्ता बनाना है। वह रास्ता लाल गेट में से प्रवेश करके हरे गेट से पास होकर रेड गेट में से बाहर निकलेगा और वह रास्ता बोर्ड पर बताए हर एक ६४ स्कवेयर में से भी पास होना चाहिए। बोर्ड पर आप आड़ा या खड़ा रास्ता बना सकते हो लेकिन टेढ़ा रास्ता नहीं बना सकते।

२.

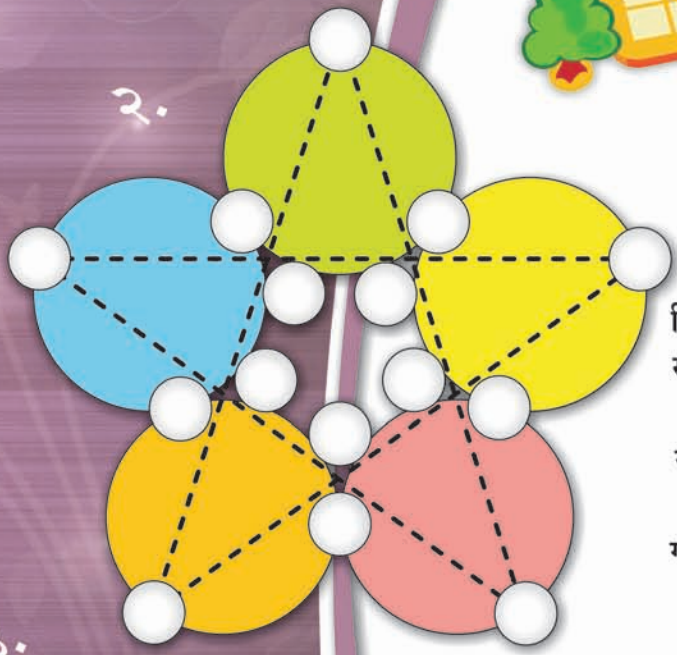

आकृति में बताए अनुसार पाँच बड़े गोले से एक स्टार बनाया गया है। और छोटे-छोटे १५ गोले उसमें सेट किए गए है। इस छोटे १५ गोले में १ से १५ अंक इस तरह रखना है ताकि एक बड़े गोले में आए हुए ५ छोटे गोले के अंकों को जोड़ने से ४० हो। १ से १५ अंक एक ही बार एक ही गोले में लिख सकते हैं। तो चलो अब दिमाग चलाना शुरू करते हैं।

३.

एक प्लैन क्यूब के सेन्टर में से पास होकर चित्र में बताए अनुसार बाँई ओर के क्यूब में स्कवेर और दाहिनी ओर के क्यूब में त्रिकोण बनाया है उसी तरह बीचवाले क्यूब में षट्कोण(हेक्सगन) बनाना है।

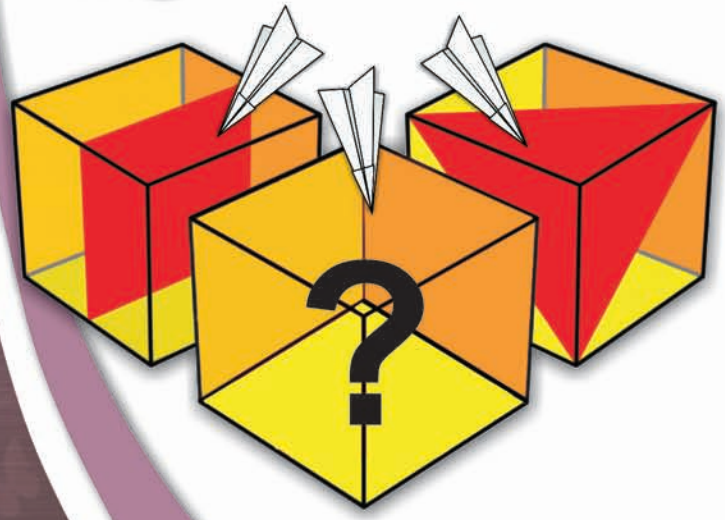

मीठी यादें

साल १९९० की बात है। नीरू माँ अहमदाबाद आई थीं। गाँव में रहनेवाली कुछ ब्रह्मचारी बहनों से उन्होंने अहमदाबाद आने के लिए कहा, और वह भी अकेले। वे बहनें कभी अपने गाँव से बाहर निकली ही नहीं थीं। उनके लिए तो अहमदाबाद तो जैसे अमरीका था। अहमदाबाद के लिए उन्होंने यह सुना था कि वह तो बहुत बड़ा शहर है। वहाँ अकेले नहीं जाना चाहिए। बहनें तो उलझन में पड़ गई, "अब क्या करेंगे?"

उन्होंने घबराते-घबराते नीरू माँ को फोन किया, "हम अकेले कैसे आएँ?" नीरू माँ ने कहा, "अरे, यदि तुम मर भी जाओगी तो सत्संग के लिए ही लेकिन तुम अकेले ही आओ, तभी तुममें अकेले आने की हिम्मत आएगी।"

बहनों ने नीरू माँ को बहुत समझाने की कोशिश की लेकिन नीरू माँ मानी ही नहीं और उन्हें अकेले ही आने के लिए कहा। आखिर बहनें अकेले ही आई। नीरू माँ ने उन्हें लाने के लिए एक महात्मा को बस स्टेन्ड पर भेजा। नीरू माँ ने उनके ठहरने की और बाकी सब सुविधाओं की तैयारी करवा रखी थीं।

उनके आते ही नीरू माँ बोली, "देखो आ गई न, पहुँच गई न। कुछ हुआ? बस, तुम इसी तरह अकेले ही आना। तुम कभी भी दूसरों पर आधार मत रखना। स्वतंत्र रहना और स्वतंत्र बनना। तुम्हें ऐसे तैयार हो जाना है कि तुम स्वतंत्र रह सको और स्वतंत्रता से निकल सको। किसी की लाचारी न रहे ऐसी बोल्ड बनो।"

बहनों ने कहा, "हाँ, नीरू माँ।"

जाते समय भी नीरू माँ ने उन्हें सब जानकारी देकर तैयार किया कि इस नंबर की बस में बैठना, यहाँ उतरना, उतर के ऐसा करना। वगैरह"

इसके बाद सभी का विश्वास पक्का हो गया। उसके बाद वे सभी जगह अकेले ही जाने लगीं। हिम्मत आ गई।

ज्ञानी अकेले ज्ञान में ही नहीं, व्यवहार में भी ऊपर ले जाते हैं!

ऐतिहासिक गौरवगाथा

विक्रम संवत तेरवीं सदी का अंत और चौदहवीं सदी के प्रारंभ का समय था। गुजरात और दिल्ली में राजसत्ता की नीव डगमगा रही थी। अल्लाउद्दीन खिलजी के आक्रमण से अनेकों मंदिर और तीर्थस्थान धराशायी हो गए थे।

ऐसे कठिन समय में भी मांडवगढ़ का राज्य शक्तिशाली और समृद्ध था। और उसका कारण था मांडवगढ़ के मंत्री पेथड शाह की अनोखी दृष्टि और विचक्षणता। उन्होंने राज्य के किले मज़बूत करवा लिए थे और राज्य के अन्न भंडारों को पूरी तरह से भर दिया था, ताकि संकट आने पर भी राज्य के लोगों को बिल्कुल भी मुसीबत का सामना नहीं करना पड़े।

पर्याप्त सत्ता, प्रसिद्धि और अपार संपत्ति के बीच भी मंत्री अपनी धर्मभावना को ज़रा भी भूले नहीं थे। उन्होंने करीब चौरासी मंदिर बनवाए थे, फिर भी उन्हें हमेशा ऐसा ही लगता रहता कि अभी तो बहुत कुछ करना बाकी है और पल-पल जीवन कम होता जा रहा है। अपने जीवन को सफल करने के लिए वे हमेशा धर्म सेवा के नए-नए मार्ग खोजते ही रहते थे।

दक्षिण भारत का देवगिरि, उस समय बहुत ही प्रसिद्ध नगर जाना जाता था। उस नगर के राजा का नाम रामदेव और मंत्री का नाम हेम प्रधान था। प्रधान के पास पैसा तो इतना अधिक था कि पानी की तरह बहाते तो भी कम न पड़े, लेकिन उसका स्वभाव इतना ज्यादा लोभी था कि एक पाई भी खर्च न करे। उस नगर के ब्राह्मण इतने तेज थे कि दूसरे धर्म को मानने ही नहीं देते थे।

देवगिरि की तरह-तरह की बातें सुनकर मंत्री पेथड शाह ने सोचा, "ऐसे विख्यात नगर में एक भी जिनमंदिर नहीं हो तो यह कितनी दुःख की बात है। और उन्होंने मन में निश्चय किया कि देवनगरी में एक भव्य जिनमंदिर बनाएँगे, जिसमें दर्शन करके लोग धर्म का बीज बोएँ।"

काम तो बहुत पवित्र था। लेकिन वह जितना पवित्र था उतना ही मुश्किल भी था। मंत्री सोचने लगे कि काम कैसे पूरा करें?

थोड़ा समय निकला। देवगिरि से थोड़ी दूरी पर ओंकारपुर नाम का

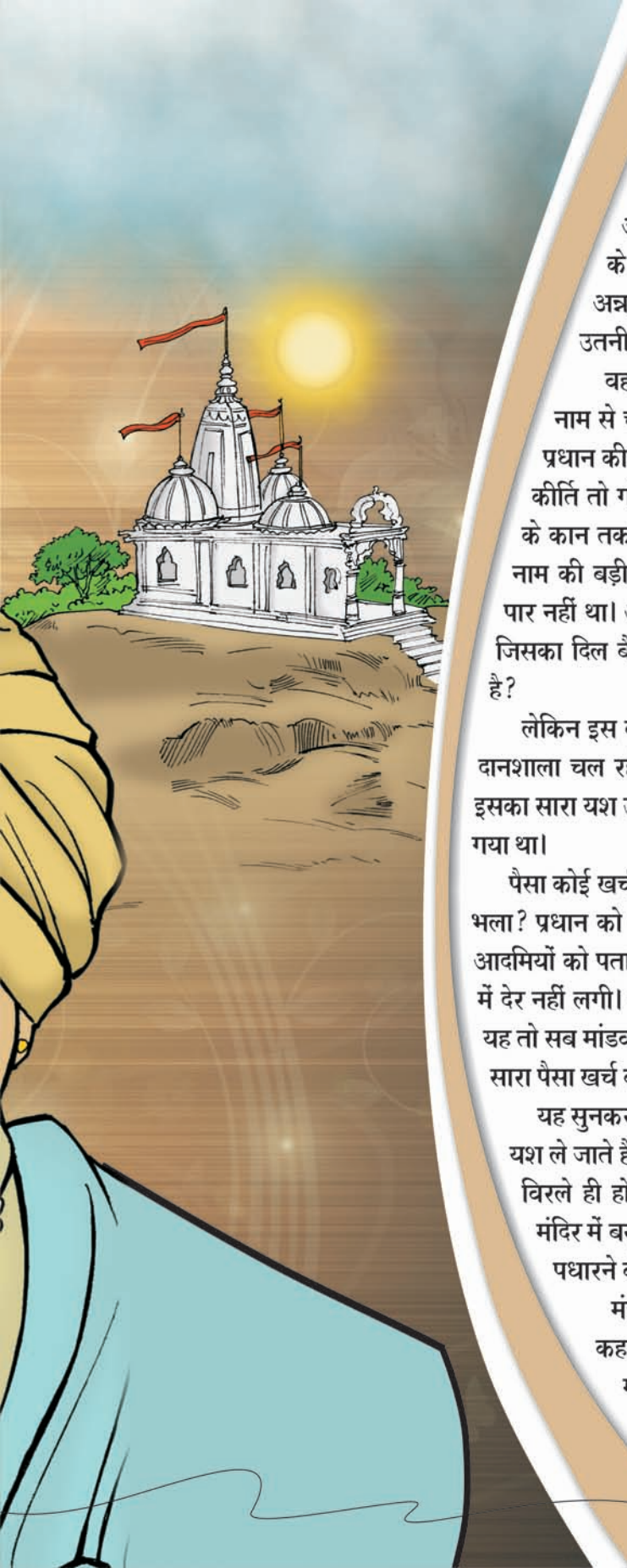

एक नगर था। उस नगर में एक नई दानशाला स्थापित की। साधु संत और अतिथि वहाँ आकर बहुत संतुष्ट होते और थके हारे मुसाफिरों के लिए तो वह सचमुच विश्रामगृह बन गया था। अन्न, पानी और आराम की वहाँ जितनी चाहिए उतनी सुविधाएँ थीं।

वह दानशाला देवगिरि के प्रधान, हेम प्रधान के नाम से चल रही थी। अक्सर साधु संत और प्रवासी हेम प्रधान की जय जयकार करते। देखते-देखते हेम प्रधान की कीर्ति तो गाँव-गाँव में फैल गई। बात फैलते-फैलते प्रधान के कान तक पहुँची। उन्होंने जब सुना कि ओंकारपुर में मेरे नाम की बड़ी दानशाला चल रही है, तब उनके अचरज का पार नहीं था। अपने बच्चों तक के लिए भी पाई खर्च करने में जिसका दिल बैठ जाए, वह कैसे ऐसी दानशाला चला सकता है?

लेकिन इस बात से इन्कार भी नहीं किया जा सकता था कि दानशाला चल रही थी । पता करने पर वह बात सही निकली। इसका सारा यश उन्हीं को मिल रहा था, इसका भी उन्हें भरोसा हो गया था।

पैसा कोई खर्च करे और यश किसी और का बढे, ऐसा होता है भला? प्रधान को बहुत आश्चर्य हुआ। प्रधान ने अपने भरोसेमंद आदमियों को पता लगाने भेजा। पता लगानेवालों को पता लगाने में देर नहीं लगी। उन लोगों ने आकर मंत्री को बताया, "महाराज यह तो सब मांडवगढ़ के मंत्री पेथड शाह की करामात है। वे ही ढेर सारा पैसा खर्च करके आपको यश दिलवा रहे है।"

यह सुनकर हेम प्रधान को लगा, "दुनिया में लोग दूसरों का यश ले जाते हैं, लेकिन अपना यश दूसरों को दे दें ऐसे तो कोई विरले ही होते हैं।" मंत्री पेथड शाह जैसे मंत्री हेम के मन मंदिर में बस गए। तुरंत ही उन्होंने पेथड शाह को देवगिरि में पधारने के लिए निमंत्रण दिया।

मंत्री पेथड शाह ने अपने मन की बात कहते हुए कहा, "मेरी एक भावना है, देवगिरि में एक भव्य मंदिर बनाएँ। पैसे की तो कोई कमी नहीं है। बस आपकी राजधानी में

मुझे योग्य जमीन दिलवा दें।"

पेथड शाह ने हेम प्रधान का मन तो पहले ही जीत लिया था। मंत्री हेम ने तुरंत ही पेथड शाह को वचन दे दिया। थोड़े ही दिनों में राजा रामदेव को मनाकर उन्होंने अपने वचन का पालन किया।

शुभ मुहूर्त में जिनमंदिर की नींव रखी गई। इस काम में बहुत से विघ्न आए। लेकिन इन सब विघ्नों के सामने मंत्री हेम और मंत्री पेथड शाह की उत्कृष्ट धर्मभावना जीत गई और मंदिर का काम आगे बढ़ने लगा।

धीरे-धीरे देवगिरि की धरती पर गगनचुंबी मंदिर बनने लगा। जैसे स्वर्ग का कोई दिव्य विमान पृथ्वी पर आकार ले रहा हो। एक तरफ मंत्री की धर्मभावना बह रही थी, दूसरी तरफ धन की नदी बह रही थी और तीसरी तरफ कारीगरों की भक्ति भी उतनी ही थी। कारीगरों का मन खुश रहे इसलिए उन्हें मुँह मांगे पैसे और ऊपर से इनाम दिया गया। और एक दिन महामंत्री पेथड शाह की भावना सफल हुई। वि.सं. १३३५ में उस मंदिर की और उसमें भगवान महावीर की प्रतिमा की प्रतिष्ठा की गई। महामंत्री का हृदय गद्‌गद् हो गया।

भगवान के ऐसे दिव्य और भव्य मंदिर के दर्शन करने पर भी कई पामर मनुष्य महामंत्री की भावना नहीं परख सके। उन बेचारों का दिल जल रहा था, "मंदिर में इतना ज्यादा धन बेकार ही खर्च कर दिया। इसका हिसाब ठीक से देखना पड़ेगा। पैसे क्या आकाश से बरसते हैं।"

और वे सब हिसाब देखने बैठ गए। उन्हें लगा हिसाब करने से चोरी पकड़ी जाएगी और ऐसा करने से मंत्रीश्वर राज़ी होंगे।

लेकिन जब मंत्रीश्वर को पता चला तो उन्होंने आज्ञा दी, "यह तो देवाधिदेव का अपना ही काम है। उनकी महाकृपा का ही फल है। उनकी कृपा के बिना इतना बड़ा काम करने की मुझ जैसे पामर मनुष्य की हिम्मत ही कहाँ? ऐसे महापवित्र और अमूल्य कार्य का हिसाब लगानेवाले हम कौन? नहीं करना हिसाब और नहीं देखने हैं हिसाब के बहीखाते।" सुननेवाले स्तब्ध रह गए।

यह जिनमंदिर महामंत्री पेथड शाह की धर्मभावना की कहानी कह रहा है। भगवान की दिव्य प्रतिमा के दर्शन करते हुए महामंत्री को लगा, "आज तो मेरा मनुष्य जन्म सफल हुआ" और उन्हें बहुत तृप्ति हुई।

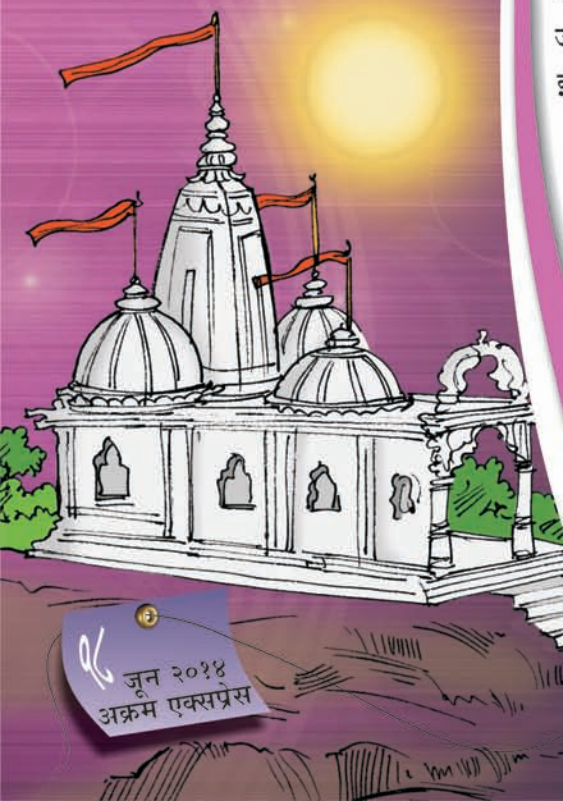

किड्स कैम्प की झलक

भरूच

भावनगर

पज़ल के जवाब

Akram Express

June 2014
Year : 2, Issue : 3
Conti. Issue No.:15

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

भूज

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.